*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*
*Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540*

# ममता कालिया के कहानी संग्रह 'मुखौटा में नारी अस्तित्व की तलाश'

**Deepti Girhotra[1]* Dr. Gyani Devi Gupta[2]**

[1] Research Scholar, Guru Kashi Univercity, Sardulgarh Road, Talwadi Sabo Bathinda, Punjab-151302

[2] Head of Hindi Department, Assistant Professor, Guru Kashi Univercity, Sardulgarh Road, Talwadi Sabo Bathindha, Punjab-151302

***सारांश:-*** *साहित्य और समाज का संबंध, रचनाकारों द्वारा यथार्थ परिस्थितियों का आंकलन करना होता हैं। ममता कालिया के कहानी सग्रंह में नारी पात्र अस्तित्वहीन होकर अपने अस्तित्व की तलाश में लगातार संघर्ष कर रहे है। आज की नारी पुरूष के समक्ष ही नही अपितु अनेक क्षेत्रों में अपना वर्चस्च को स्थापित करने की तलाश में है। नारी ने अपनी मेहनत द्वारा अपने अस्तित्व को एक अलग पहचान दी है। वे परंपरागत रूढियों को तोड़कर आगे बढ़ रही हैं। वे किसी प्रकार का शोषण व अत्याचार को सहन नही कर रही हैं बल्कि अन्नाय के खिलाफ पूर्ण रूप से सघंर्ष करती हुई नजर आ आती हैं। ममता कालिया के कहानी संग्रह 'मुखौटा' में नारी अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है जिसका वर्णन विभिन्न कहानियों द्वारा किया गया हैं। ममता कालिया के 'मुखौटा' कहानी संग्रह की कहानी 'चिरकुमारी' में नारी अपने स्वतन्त्र विचारों द्वारा अस्तित्व को तलाश रही हैं। इसी कहानी सग्रंह की कहानी 'प्रतिप्रश्न' में महिमा नायिका का अकेलेपन से झूझते हुए व अविवाहित कामकाजी नारी होते हुए भी विवादास्पद जीवन यापन करना। 'उत्तर-अनुराग' कहानी में 'खन्नी आंटी' का पति की बेवफाई को सहन करते हुए भी अपने अस्तित्व को कायम न कर पाना। 'श्यामा' कहानी में श्यामा नायिका अपने पति द्वारा अत्याचार व शोषण को सहन करती हुए अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील होना। 'सीमा' कहानी में नायिका 'सीमा' अपने द्वारा प्रताड़ित व दुखों को सहन करती हुई अपने अस्तित्व अर्थात अपने स्व की पहचान बनाने के लिए संघर्ष करना। इस शोध पत्र में ममता कालिया के कहानी संग्रह मुखौटा में नारी पात्र जो अस्तित्वहीन हुए, अपने अस्तित्व की तलाश में उन्हे जो संघर्ष करना पड़ा, सभी पहलुओं पर चिंतन करना ही इस शोध-पत्र का उद्देश्य है।*

***बीज शब्द:-*** *नारी अस्तित्व की तलाश, साहित्य और समाज, नारी अस्तित्व, नारी पर शोषण व अत्याचार।*

----------X----------

## मूल प्रतिपादन

साहित्य को मानव मन की विशेष रमणीय अनुभूति कहा जाता है। समाज में इसकी परिधि बहुत ही व्यापक व विस्तृत होती है। कहानी एक प्रकार की कला होती है और इस कला का समाज से अलग होकर कोई महत्व नही रह जाता। इसमें जीवन को गहराई जानने व जीवन की वास्तविकता को जानने का अवसर मिलता है। ममता कालिया के कहानी सग्रंह में जीवन संबंधी समस्याओं का यथार्थ अंकन करते हुए अपनी कहानियों में उजागर किया है क्योंकि वह स्वंय नारी होकर नारी के दर्द को ब्यांन कर सकती है।

नारी अस्मिता का अभिप्राय नारी के सामाजिक व आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति से है। वर्तमान समय में नारी ऐसे समय से गुजर रही है जहां पर उसका एक पांव घर से बाहर है और दूसरा रसोई के चैखट के अंदर है। समय की मांग अनुसार नारी जीवन संबंधी समस्याओं को उभारा गया है, और नारी अस्मिता की तलाश की ओर अग्रसर करने का बीड़ा उठाया गया है। ममता कालिया की कहानियां भोगे हुए जीवन का यथार्थ है। इनकी कहानियों के द्वारा नारी अपनी अस्मिता की तलाश कर रही है। इन्होनें नारी की समस्याओं को बड़ी गहनता के साथ प्रस्तुत किया है। इनकी कहानियां का विषय नारी जीवन का केवल प्रेम और विवाह तक सीमित नही है बल्कि आत्मविश्वास में वृद्धि कर समाज में अपनी अस्मिता की पहचान कराना है। इन्होनें यह माना है कि नारी को अपने मानसिक स्तर में बदलाव लाना चाहिए, ताकि वह अपने

www.ignited.in

अकेलेपन, घुटन, मुक्ति की छटपाहट की स्थिती से बाहर आ सके।

नारी अस्मिता क्या है? क्या पुरूष के समान अधिकार ग्रहण करना नारी अस्मिता है। क्या केवल स्वतंत्र होकर निर्णय लेना या आर्थिक रूप स्वतंत्र होना नारी अस्मिता है। सही मायने में देखा जाए तो नारी अस्मिता का अर्थ नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोेण व मानसिकता में बदलाव और जिसमें खुद नारी का दृष्टिकोण भी शामिल हो।

"नारी सशक्तिकरण के इस दौर में भारतीय नारी विषयक दृष्टि की प्रसंगिकता अब पूरे विश्व में सिद्ध हो रही है। नारी अब अबला, प्रशिक्षित, सुकोमला नहीं रही। बड़े-बड़े संघर्ष और चुनौतियां और संकटों में उसकी रचनात्मक तथा शक्ति रूपा छवि अब विशेष रूप से उजागर होने लगे है। वह दया, क्षमा, स्नेह, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति तो है ही, परिवार, समाज तथा राष्ट्र के निर्माण और विकास में भी हर प्रकार से सक्रिय एवं समाहित दिखनी लगी।"[1]

इक्कीसवीं सदी में भी आज भारतीय समाज में नारी को वह दर्जा व सम्मान नही मिल पाया जो उसे मिल जाना चाहिए था। वर्तमान समाज में भी वधु-दहन, तलाक आदि सब कुछ बेधड़क हमारे समाज में निर्भयतापूर्वक हो रहा है। और जिसके लिए नारी को ही दोषी माना जाता है।

"नारी अस्मिता सदियों की जड़ मानसिकता और सामाजिक अंतक्रियों और असमानता के प्रति बदलाव लाना चाहती है। शिक्षा के प्रसार और संचार माध्यमों के कारण बढ़ती जागरूकता के कारण समाज में नारी पारंपरिक छवि एक परिवर्तन संस्करण के रूप में सामने आई है। पुरानी पस्थितियां बदली हैं, परिवार व्यवस्थायें बदली हैं, अधिकार चेतना बदली है किंतु नारी की मूलभूत स्थिति में अंतर नहीं आया। नारी को परिवार के दायरे तक ही सीमित मानने की मानसिकता, पत्नित्व और मातृत्व की रुढ़ अवधारणायें और कठोर बंधन तथा नारी चिंतन की आदर्श छवि के प्रति जकड़न उसे किसी भी स्वतंत्र सोच से परहेज करना सिखाती है।"[2]

वर्तमान समय में नारी अपने अस्तित्व के प्रति सजग है। ममता कालिया की कहानी संग्रह में नारी के अस्तित्व, पीड़ा, विद्रोह, संघर्ष का स्वर इनकी कहानियों में प्रकट हुआ है। ममता कालिया अपनी कहानियों के द्वारा समाज को प्रभावित करने में सफल रही है। उन्होंने नारी जीवन की अनेक समस्याओं को लेकर कहानियां लिखी है। स्वतत्रंता के बाद भी नारी अनेक प्रकार की कुरीतियों, प्रथाओं, घरेलू हिंसा व अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए उसे नारी संघर्ष के विविध रुपों का चित्रण किया है- माँ, पत्नि, बहन, बेटी नारी के विविध रूप जो अपने अस्तित्व पाने के लिए लड़ रहे हैं, समाज में उनको समानजनक स्थान नहीं है, इन सब का चित्रण ममता कालिया की कहानी संग्रह में मिलता है।

वर्तमान समाज नारी यहां भी हो चाहे वह घर, परिवार व समाज में हो, हर जगह इस का शोषण हो रहा है परंतु आज भी समाज व्यवस्था में भी इन परिस्थितियों में कुछ खास परिवर्तन नहीं हुआ है। ममता कालिया की कहानियां चिरकुमारी, प्रतिप्रश्न, उत्तर अनुराग, अलमारी, श्यामा और सीमा आदि कहानियों में नारी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है।

ममता कालिया कभी समाज के पूरे परिवेश में समकालीन सरोकार ढूंढती है तो कभी नयी स्वतंत्रायोत्तर नारी को उसके पूरे वैभव और संघर्ष में चित्रित करती हैं। इनकी कहानियों में अनुभव और अनुभूति की दीप्ति, २ष्टिकोण के खुलेपन के साथ मिलकर हिंदी कहानी के उस स्वरूप को परिभाषित करती है।

'चिरकुमारी' कहानी में ऐसी नारी का चित्रण दिखाई देता है जो स्वतंत्र विचारों वाली है। वह विवाहित जीवन जीने के हक में नही है। वह शादी के नाम पर अपनी आजादी को खोना नही चाहती। "दिशा के घर में हर वक्त रौनक रहती। उसे बडी हैरानी होती जब आने वाले कहते, 'कैसे रह लेती हो अकेली, दिल नही घबराता तुम्हारा'। शादीशुदा लोग समझाते, 'पैतीस की उम्र इतनी ज्यादा भी नही होती। 'हमें बताए कोई अच्छा सा लड़का। हैरानी की बात यह कि पच्चीस-तीस साल के विवाहित जीवन के बाद भी पत्नियों में असुरक्षा की भावना थी। दिशा को तकरीबन इतने ही साल हो गये शादी शुदा लोगों के रिश्ते परखते।"[3]

ममता कालिया ने नारी जीवन को केन्द्र मानकर कहानियां लिखी। इन्होनें नारी के दुख-दर्द को कहानी में लाने का प्रयास किया है। जीवन के विभिन्न पड़ावों पर जुझती और तकलीफों को सहन करती, और उनके जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है।

'अलमारी' कहानी में लड़की के माता-पिता की मनोदशा के बारे में बताया गया है। जब एक लड़की का रिश्ता तय होता है तब लड़की के माता-पिता दहेज एकत्रित करने में लग जाते है। ससुराल वालों की मांग पूरी करते-करते लड़की के माता-पिता के ऋण लेने की नौबत आ जाती है और लड़के वालो की

www.ignited.in

मांग पूरी न होने पर केरोसीन डालकर जलाने की स्थिति व तलाक या घर से बाहर निकालने की स्थिति बना देते है ससुरालवाले। कहानी में बताया गया है कि "गाय बछड़ा बेचकर घड़ी, साइकिल, ट्राजिस्टर तो खरीद लिए है, गुरूजी पर अलमारी नही आयी हैं। हल्की से हल्की अलमारी भी पाँच सौ की है। लड़के वाले की लिस्ट में अलमारी सबसे ऊपर लिखी है।"[4]

परिवार के भीतर-बाहर सुरक्षा और संरक्षण की प्रकिया में औरतें पुरूषों के हाथों जब बार-बार छली जाती हैं तो अपने-अपने मनचाहे या उपलब्ध रास्ते खुद चुनती है या कोई और रास्ता मिलने तक ही सता पुरूष की शरण में रहती हैं।

आज नारी जिस मोड़ पर खड़ी हैं उससे नारी अस्तित्व पर शंसय व्यक्त किया जा रहा है। क्या नारी अपने स्वंय की पहचान बना पायेगी "नारी लक्ष्मी है, नारी देवी है, नारी माता हैं। इसलिए तो नारी की स्थिति चिंतनतीय है। नारी अपने अस्तित्व और अपनी स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करती आई है। वह अपनी आत्मनिर्भरता को प्राप्त करने के लिए कठिन परिस्थितियों का सामना करती आई है। ममता कालिया की उत्तर-अनुराग कहानी में खन्नी आंटी का अकेलापन पति का कार्यव्यवस्ता का वर्णन किया गया है। इस कहानी में दर्शाया गया है कि 'रेनू' नायिका का अकेलापन को दूर करने के लिए घर के कामों में अपने आप को व्यस्त रखना। एक दिन कार्यव्यस्ता और अकेलापन के कारण उनकी मृत्यु हो जाती है। नारी सारी उम्र अपने आप को घर के कामों में, पति की देखभाल व बच्चों के ख्याल रखने में गंवा देती है पर उसकी कभी अपनी स्व-पहचान नही बना पाती न ही वह कभी अपने विचारों को किसी के समक्ष खुलकर वर्णन कर पाती है।

इनकी कहानियों में घरेलू नारी जीवन की त्रासदी का वर्णन किया गया है, घर-परिवार से बाहर शोषण व अत्याचार का शिकार होती नारी का यथार्थ अंकन किया गया है। दामत्य जीवन में नारी का स्वतंत्र व्यक्तित्व की चाह इनकी कहानियों में मुख्य रूप से उभर कर आई है। नारी को अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के लिए आत्मनिर्भर बनना पड़ेगा।

'श्यामा' कहानी में श्यामा अपनी खुद की पहचान बनाने के लिए संघर्ष करती है पर वह खुद की पहचान बना नहीं है पाती, और वह पति द्वारा किए गए शोषण व अत्याचार का शिकार हो जाती है और एक दिन अपना दम तोड़ देती है। "तुम विरोध क्यों नही करतीं पत्नी हो घर तुमारा है वे कैसे हावी हो सकते है। उनकी सख्ती के आगे एक नही चलती गुस्से में हाथ भी उठा देते है। हर बार उसकी बातों से पता चलता उसके पति आक्रामक और गैर जिम्मेदार हो गये है।

एक दिन जार्जटाउन से गुजरते हुए मेरी नजर एक मर कंकाल जैसी आकृति पर पड़ी जो बड़ी परिचित नजर से मेरी ओर देख रही थी उसने खिड़की से अपना सूखा सांवला हाथ निकालकर मुझे बुलाया, मैं उसको आप को अंदर बुला नहीं सकती आजकल ताला लगाकर आधिम जाते हैं। तभी एक दिन अखबार के स्थानीय पृष्ठ पर एक कालम में सबसे नीचे छोटी सी खबर दिखाई दी, रमेश चन्द श्रीवास्तव की पत्नी श्यामा श्रीवास्तव सीडी से गिरकर बेहोश हो गई उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया यहां आज सवेरे दम टूट गया।"[5]

वर्तमान समय में भी नारी को बोलने का मौका नहीं दिया जाता। नारी अस्मिता के निर्माण के लिए नारी की चुप्पी को कैसे तोड़ा जाए। नारी अस्मिता के सामने उसकी सबसे बड़ी चुनौती पितृसत्तात्मक संबंध, मूल्य और समाज है। नारी का कभी अपनी इच्छा का तो सवाल नहीं है, उसे कभी समाज माता-पिता व पति की इच्छा अनुसार ही अपना जीवन व्यतीत करना होता है।

'सीमा' कहानी में सीमा नायिका द्वारा यह दर्शाया गया है कि "पहले बच्चों को अपनी सीमाएं बताओ। फिर उससे कहो 'सोच लो' क्या सोचो। 'सीमा' उसका नाम ही मां-बाप में सीमा रख दिया था, अपनी सीमा सोच कर उन्हें उसकी संभावना, सपनों और इरादों से कोई मतलब नहीं था। इस पार ही क्या था जो उस पार से डर लगता। घर में मां बाप के अठपंचे चंगुल में सीमा घुट चली थी। पिता के मन में थोड़ी हमदर्दी थी। पर वे कायर थे। वे न सिर्फ मां में डरते बल्कि समाज से भी।"[6]

सीमा को लगा शादी के साथ साथ व सब बंदिशे खत्म हो जाएंगी जो इस घर में उसने झेली। पितृसत्तात्मक समाज में नारी की अपनी स्वतंत्रता पहचान व व्यक्तित्व नहीं है, नारी की अस्मिता को तय करने वाला पुरुष ही है।

ममता कालिया की कहानियों में ऐसी नारी का चित्रण दिखाई देता है जो स्वतंत्र विचारों वाली है, वह विवाहित जीवन जीने के हक में नहीं है। "और सबकी समस्याएं ढूंढने में तत्पर रहती है।"[7] ऐसा वर्णन ममता कालिया की कहानी 'चिरकुमारी' में देखने को मिलता है। 'दिशा' सोचती कितनी मुश्किल से उसने यहां तक का सफर तय किया है, कई तरह की ज्यादतियों और कमियों का मुकाबला उसने अपनी शिक्षा और प्रखर चेतना से किया था। "यूनिवर्सिटी में वह जंतु विज्ञान के प्राध्यापक थी लेकिन उसकी रुचिओं का क्षेत्र जीव जंतुओं के संसार से आगे था। इसलिए अगर कोई छात्र अपनी समस्या लेकर आती वह उसके हल ढूंढने की कोशिश करती।"[8]

www.ignited.in

'प्रतिप्रश्न' कहानी में ऐसी नारी के स्वरुप को परिभाषित किया है जो अपनी अस्मिता की तलाश में है। इसमें अविवाहित कामकाजी नारी का वर्णन किया है जो अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए ऑफिस में अधिक परिश्रम करती है। "यह तो मेरी जिंदगी है अकंल। रात को इतनी थककर घर पहुँचू कि बिस्तर पर पड़ते ही नीद आ जाए। आपकी तरह मुझे वेलियम फाइव नही खानी पड़ती।[9]

हमारे समाज में नारी के अनेक रूपों का वर्णन मिलता है। वह हमारे समाज से ही किसी न किसी रूप में प्रताड़ित होते है या अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए प्रयासरत रहती हैं। ममता कालिया का कहानी संग्रह 'मुखौटा' नारी के अस्मिता की तलाश की कहानियां है।

अन्त में कह सकते हैं कि 'मुखौटा' में नारी अस्मिता से संबंधित विविध आयाम नारी जीवन के तनाव व दाम्पत्य जीवन की मुश्किलें, संघर्ष, नारी जीवन की यातनाएं आदि का यथार्थ वर्णन किया गया है। इस कहानी संग्रह के माध्यम से नारी जीवन से जुड़ी हुई हर उस मानसिकता को बदलने पर भी जोर दिया है कि नारी व पुरुष में भिन्नता होती है पर उनमें भेद नहीं करना चाहिए। यह कहानी संग्रह नारी के कई रूपों में अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते हुए परिलक्षित कर अपनी अस्मिता की तलाश कर एक नई सोच प्रदान करता है। इनके कहानियों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह लेखन आत्मविश्वास और नारी अस्मिता को जागृत करता है। इनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता यह है कि इनका दृष्टिकोण पाश्चात्य न होकर भारतीय रहा है।

## संदर्भ ग्रंथ सूचीः


1. डॉ. अशोक सभ्रबवाण, स्त्री विमर्श बनाम नारी अस्मिता, पृ.स. 20
2. वही, पृ. सं. 63
3. ममला कालिया, मुखौटा, पृष्ठ सं0 8
4. वही, पृ. सं. 60
5. वही, पृ. सं. 63-64
6. वही, पृ. सं. 68
7. वही, पृ. सं. 8
8. वही, पृ. सं. 32
9. वही, पृ. सं. 32



**Corresponding Author**

**Deepti Girhotra***

Research Scholar, Guru Kashi Univercity, Sardulgarh Road, Talwadi Sabo Bathinda, Punjab-151302

rohit02900@gmail.com


www.ignited.in